अनूठा तोहफा

इटली की लोककथा

मार्था हैमिल्टन, चित्र : जॉन कन्ज़लेर

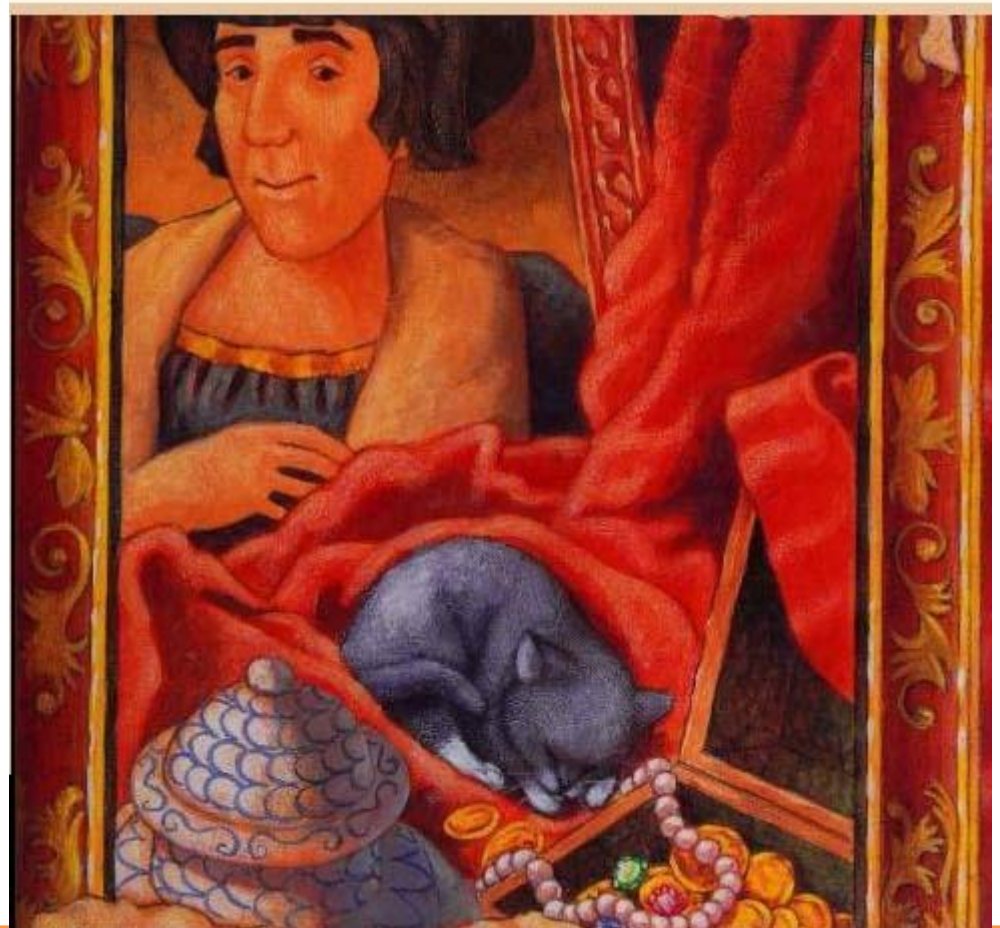

एक पुरानी कहावत है कि "अच्छी चीजें छोटे-छोटे पैकेट्स में आती हैं." मसालों के व्यापार के शुरू के दिनों में, यह निश्चित रूप से सच था. व्यापारी यूरोप छोड़कर दालचीनी, लौंग और जायफल की खोज में जाते थे. यूरोप में वे मसाले इतने दुर्लभ थे कि केवल सबसे धनी लोग ही उन्हें खरीद पाते थे.

जब एंटोनियो, एक इतालवी व्यापारी, मसालों के व्यापार के लिए जेनोआ से रवाना हुआ, तो उसे पता चला कि उसके पास एक दुर्लभ खजाना था, जिसकी मसाले वाले द्वीप के राजा को बहुत ज़रुरत होगी.

अनूठा तोहफा

इटली की लोककथा

मार्था हैमिल्टन,

चित्र : जॉन कन्ज़लेर

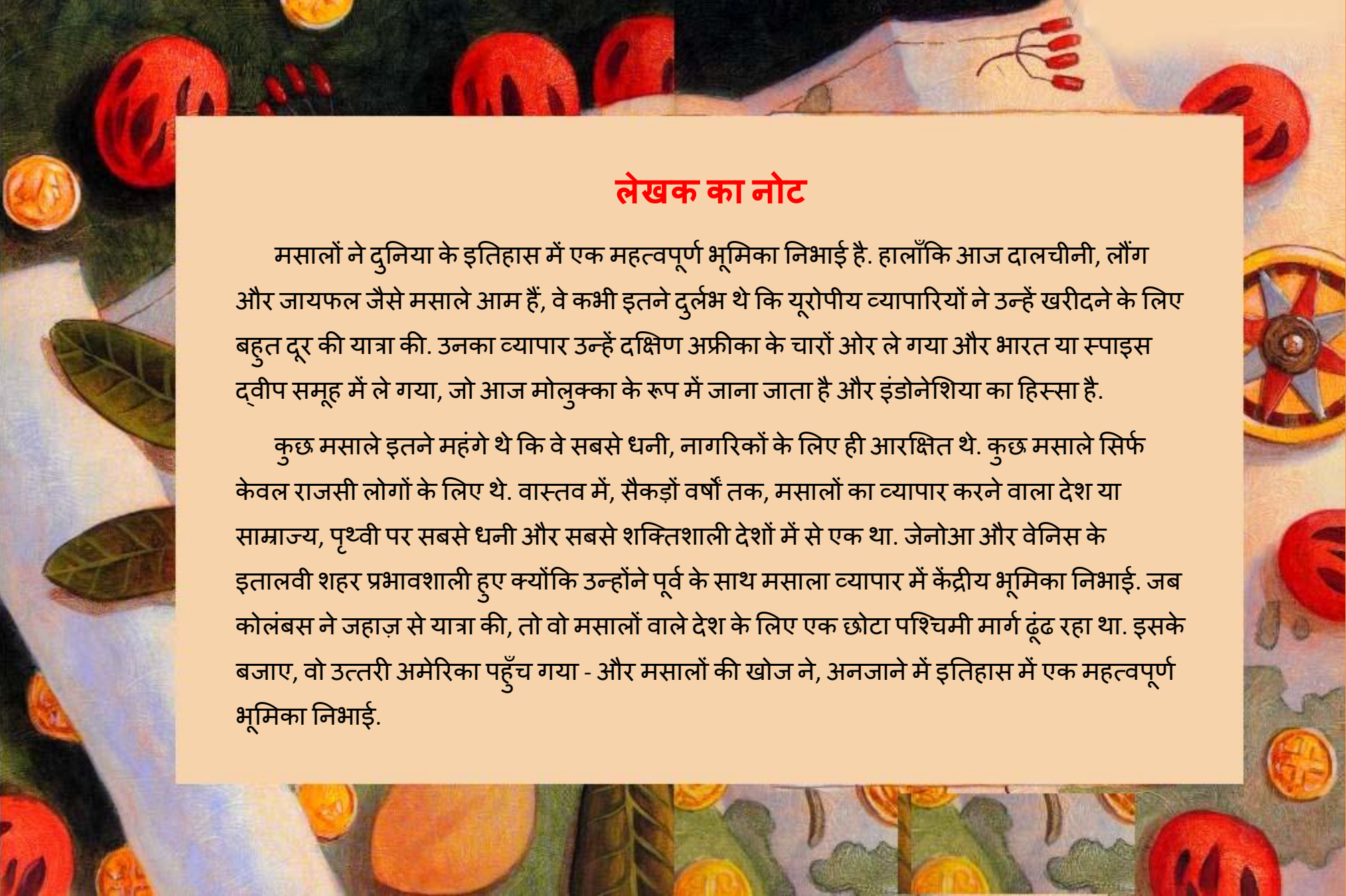

लेखक का नोट

मसालों ने दुनिया के इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. हालाँकि आज दालचीनी, लौंग और जायफल जैसे मसाले आम हैं, वे कभी इतने दुर्लभ थे कि यूरोपीय व्यापारियों ने उन्हें खरीदने के लिए बहुत दूर की यात्रा की. उनका व्यापार उन्हें दक्षिण अफ्रीका के चारों ओर ले गया और भारत या स्पाइस द्वीप समूह में ले गया, जो आज मोलुक्का के रूप में जाना जाता है और इंडोनेशिया का हिस्सा है.

कुछ मसाले इतने महंगे थे कि वे सबसे धनी, नागरिकों के लिए ही आरक्षित थे. कुछ मसाले सिर्फ केवल राजसी लोगों के लिए थे. वास्तव में, सैकड़ों वर्षों तक, मसालों का व्यापार करने वाला देश या साम्राज्य, पृथ्वी पर सबसे धनी और सबसे शक्तिशाली देशों में से एक था. जेनोआ और वेनिस के इतालवी शहर प्रभावशाली हुए क्योंकि उन्होंने पूर्व के साथ मसाला व्यापार में केंद्रीय भूमिका निभाई. जब कोलंबस ने जहाज़ से यात्रा की, तो वो मसालों वाले देश के लिए एक छोटा पश्चिमी मार्ग ढूंढ रहा था. इसके बजाए, वो उत्तरी अमेरिका पहुँच गया - और मसालों की खोज ने, अनजाने में इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

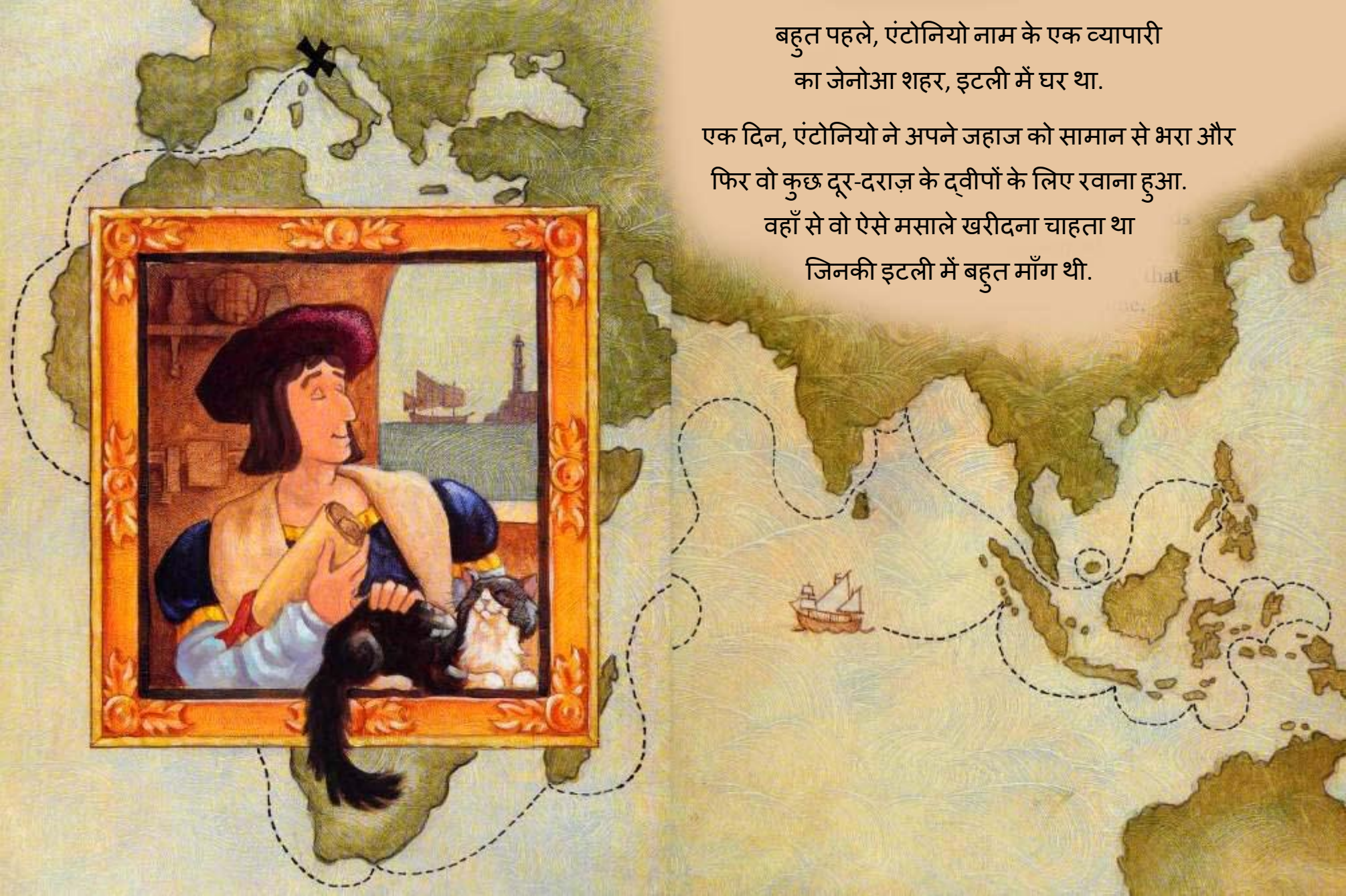

बहुत पहले, एंटोनियो नाम के एक व्यापारी
का जेनोआ शहर, इटली में घर था.

एक दिन, एंटोनियो ने अपने जहाज को सामान से भरा और
फिर वो कुछ दूर-दराज़ के द्वीपों के लिए रवाना हुआ.
वहाँ से वो ऐसे मसाले खरीदना चाहता था
जिनकी इटली में बहुत माँग थी.

वहां पहुँचने के बाद, एंटोनियो ने एक द्वीप से दूसरे द्वीप की यात्रा की.

उसने दालचीनी खरीदी और अपना मखमल बेंचा

उसने यूरोपीय गुड़ियें बेचीं और उनके बदले में लौंग खरीदीं.

उसने चमड़े की बेल्टों के बदले में जायफल खरीदे.

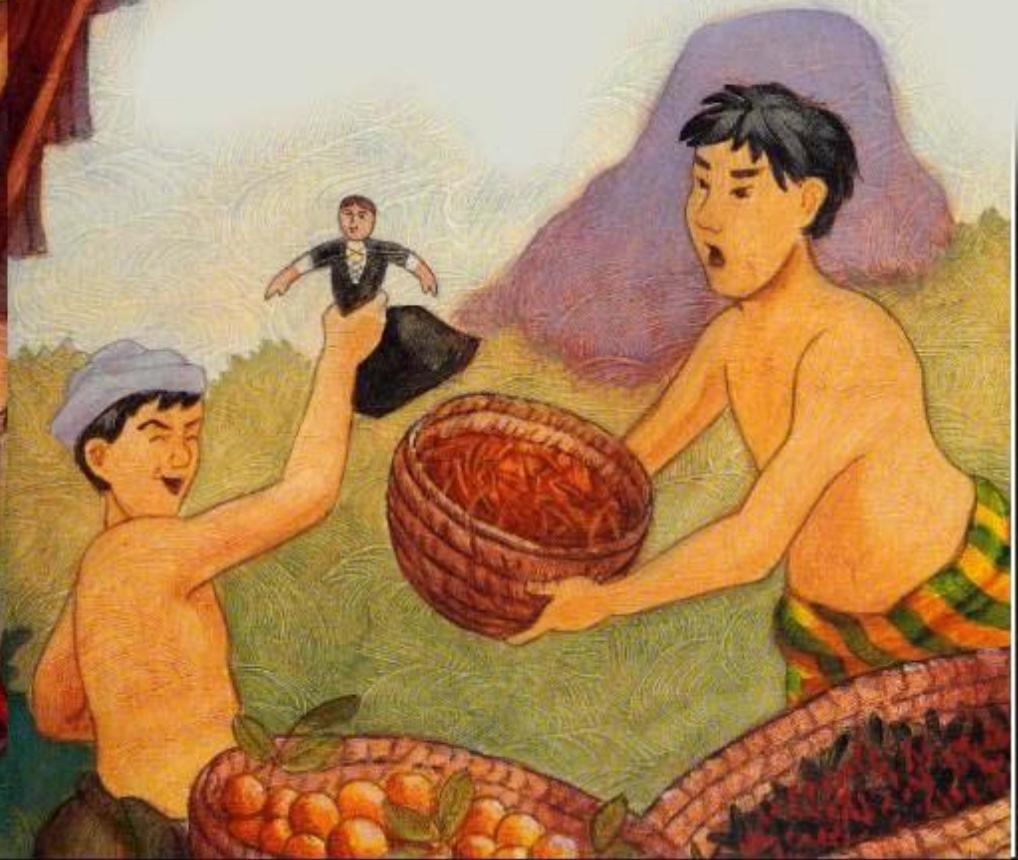

एक द्वीप पर, एंटोनियो को राजा के महल में भोजन के लिए आमंत्रित किया गया.

लेकिन जब वो खाने के लिए बैठा तो एंटोनियो ने देखा कि कई सिपाही लाठी पकड़े हुए तैनात थे जैसे कि वे कुछ मारने के लिए तैयार हों.

"कितना अजीब है!" उसने आश्चर्य से पूछा.

"ये सिपाही क्या कर रहे हैं?"

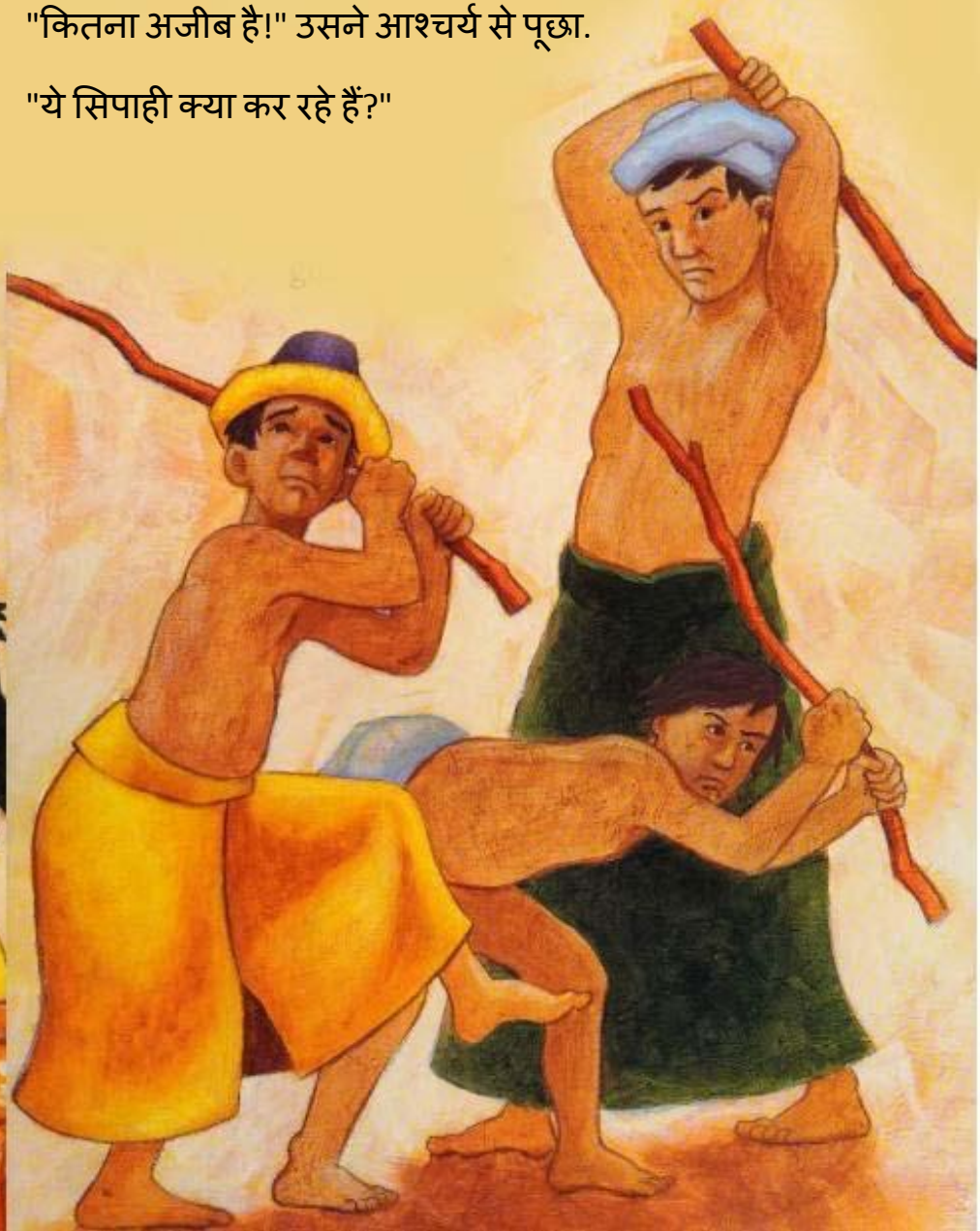

रात का खाना परोसते समय एंटोनियो को अपने सवाल का जवाब मिला.

भोजन की गंध से आकर्षित होकर एंटोनियो को वहां अचानक दर्जनों चूहे दिखाई दिए.

पहरेदारों ने उन चूहों का पीछा किया और उन्हें अपनी लाठियों से मारकर भगाया.

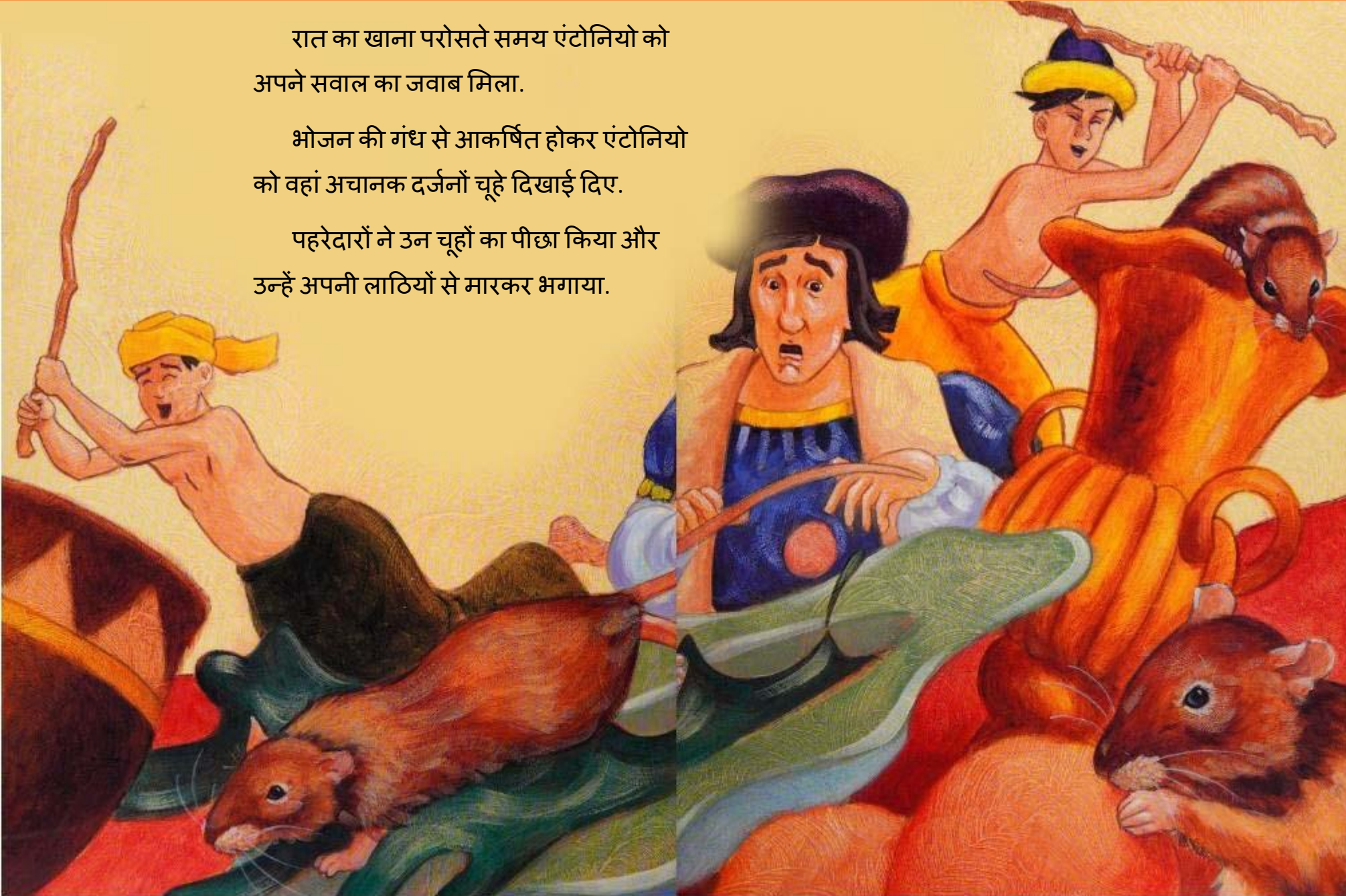

एंटोनियो काफी भयभीत हुआ.

"महाराज!" उसने कहा, "क्या आपके इस द्वीप में बिल्लियाँ नहीं हैं?"

एंटोनियो की बात सुनकर राजा चकरा गया.

"बिल्लियाँ? उनके बारे में उसने कभी सुना तक नहीं था. वे क्या बला थीं?"

"बिल्लियाँ छोटे और प्यारे जानवर होते हैं जिन्हें शिकार करना पसंद होता हैं," एंटोनियो ने उत्तर दिया,

"उन्हें चूहों का पीछा करना और उन्हें मारकर खाना सबसे अधिक पसंद होता है. वे कुछ ही समय में इस द्वीप को चूहों से छुटकारा दिला देंगी!"

"सच में?" राजा ने आश्चर्य से पूछा.

"हमें कुछ बिल्लियाँ कहाँ से मिल सकती हैं? यदि आप हमारे लिए कुछ बिल्लियां लाएंगे तो हम उनके लिए आपको मुंह मांगे पैसे देंगे! आपको बस उनकी कीमत बतानी होगी.”

"मुझे बिल्लियों के लिए पैसों की ज़रुरत नहीं है," एंटोनियो ने समझाया. "हमारे जहाज पर कई बिल्लियां हैं. आपको कुछ बिल्लियां देकर मुझे ख़ुशी होगी."

एंटोनियो खाने के बाद अपने जहाज़ पर गया और वहां से एक मादा और एक नर बिल्ली लेकर जल्दी से लौटा. जब बिल्लियों को छोड़ा गया तो उन्हें देखकर चूहे तुरंत डाइनिंग हॉल से भागे, और बिल्लियाँ उन्हें पकड़ने के लिए लपकीं.

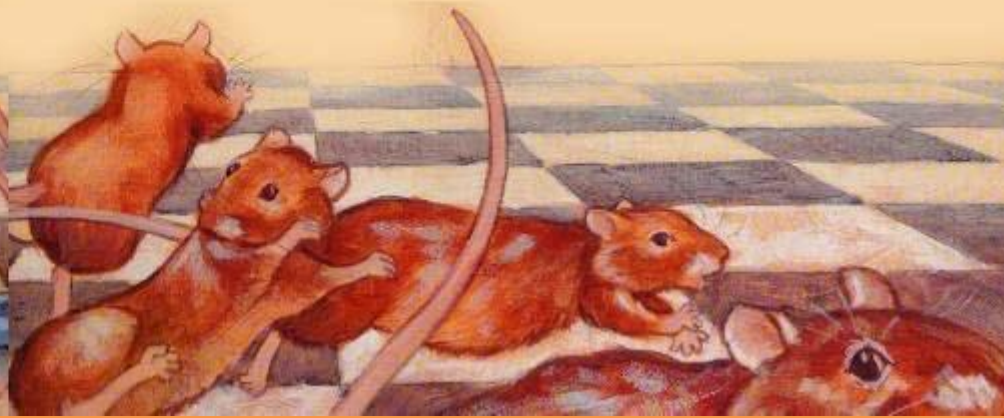

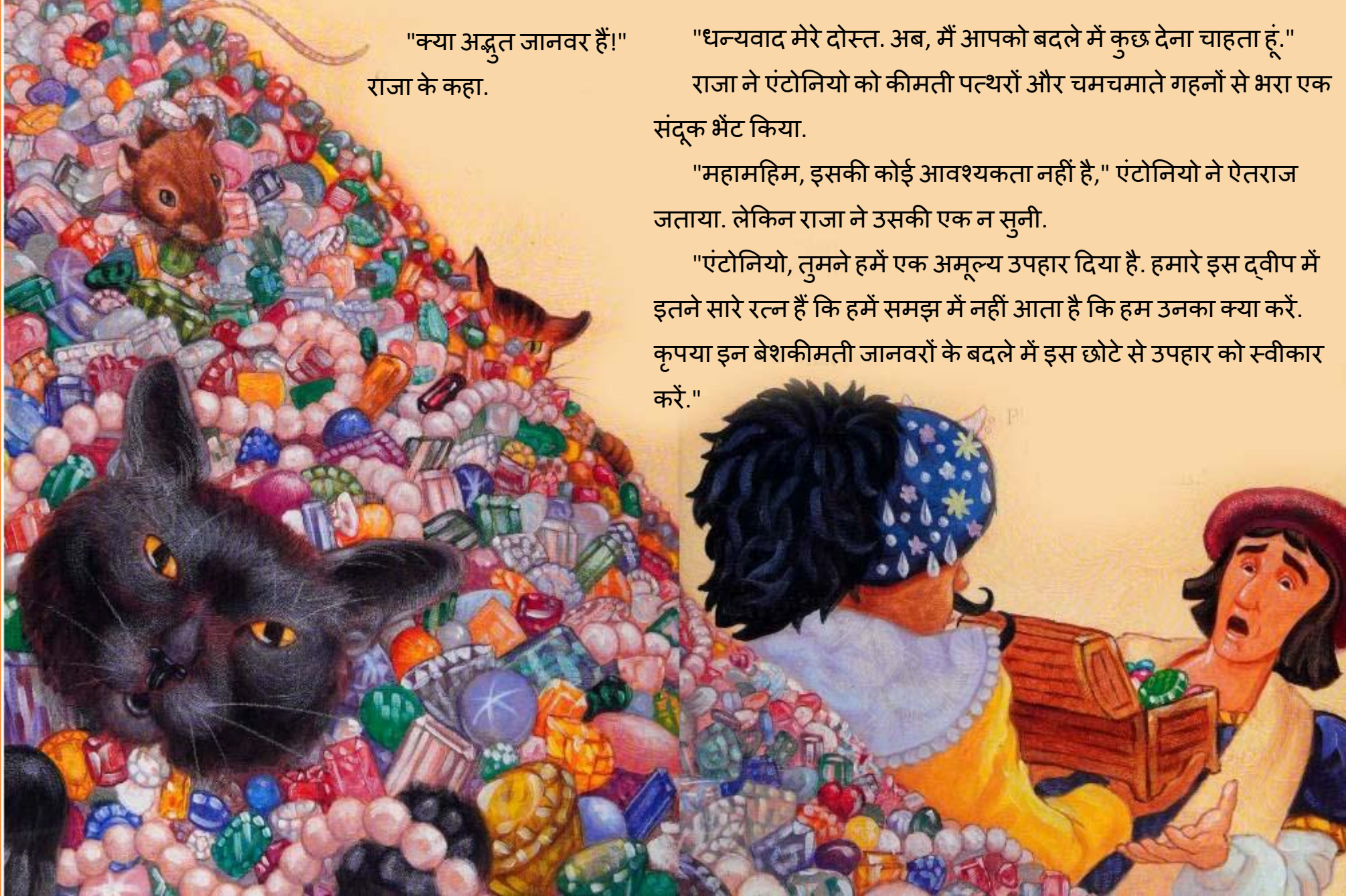

"क्या अद्भुत जानवर हैं!" राजा के कहा.

"धन्यवाद मेरे दोस्त. अब, मैं आपको बदले में कुछ देना चाहता हूं."

राजा ने एंटोनियो को कीमती पत्थरों और चमचमाते गहनों से भरा एक संदूक भेंट किया.

"महामहिम, इसकी कोई आवश्यकता नहीं है," एंटोनियो ने ऐतराज जताया. लेकिन राजा ने उसकी एक न सुनी.

"एंटोनियो, तुमने हमें एक अमूल्य उपहार दिया है. हमारे इस द्वीप में इतने सारे रत्न हैं कि हमें समझ में नहीं आता है कि हम उनका क्या करें. कृपया इन बेशकीमती जानवरों के बदले में इस छोटे से उपहार को स्वीकार करें."

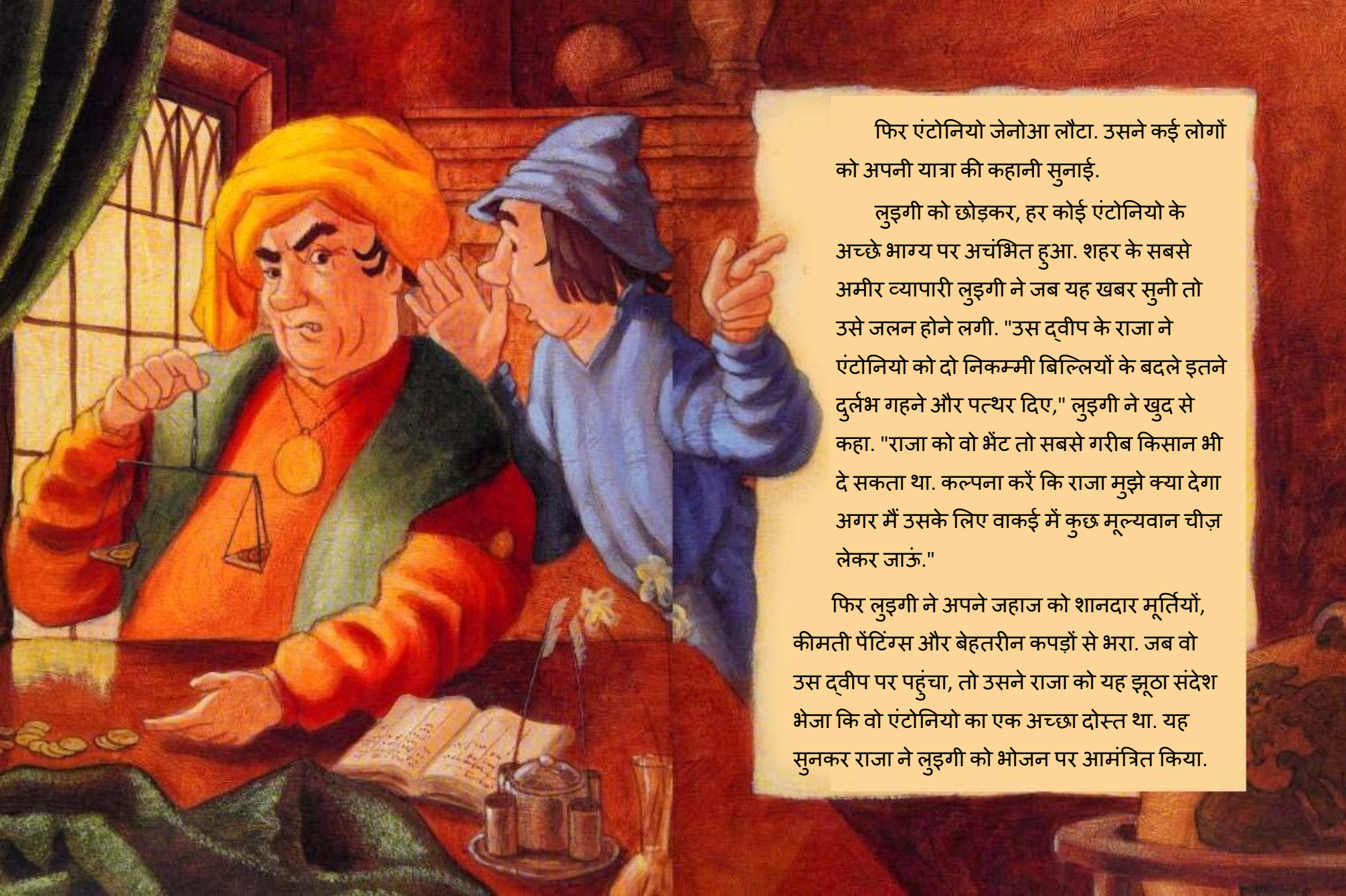

फिर एंटोनियो जेनोआ लौटा. उसने कई लोगों को अपनी यात्रा की कहानी सुनाई.

लुइगी को छोड़कर, हर कोई एंटोनियो के अच्छे भाग्य पर अचंभित हुआ. शहर के सबसे अमीर व्यापारी लुइगी ने जब यह खबर सुनी तो उसे जलन होने लगी. "उस द्वीप के राजा ने एंटोनियो को दो निकम्मी बिल्लियों के बदले इतने दुर्लभ गहने और पत्थर दिए," लुइगी ने खुद से कहा. "राजा को वो भेंट तो सबसे गरीब किसान भी दे सकता था. कल्पना करें कि राजा मुझे क्या देगा अगर मैं उसके लिए वाकई में कुछ मूल्यवान चीज़ लेकर जाऊं."

फिर लुइगी ने अपने जहाज को शानदार मूर्तियों, कीमती पेंटिंग्स और बेहतरीन कपड़ों से भरा. जब वो उस द्वीप पर पहुंचा, तो उसने राजा को यह झूठा संदेश भेजा कि वो एंटोनियो का एक अच्छा दोस्त था. यह सुनकर राजा ने लुइगी को भोजन पर आमंत्रित किया.

जब उसने लुइगी के उपहारों को देखा, तो राजा दंग रह गया.

"मैं आपकी उदारता से बहुत प्रभावित हूं, लुइगी," राजा ने ऐलान किया. "मुझे समझ में नहीं कि आपको बदले में क्या दूँ."

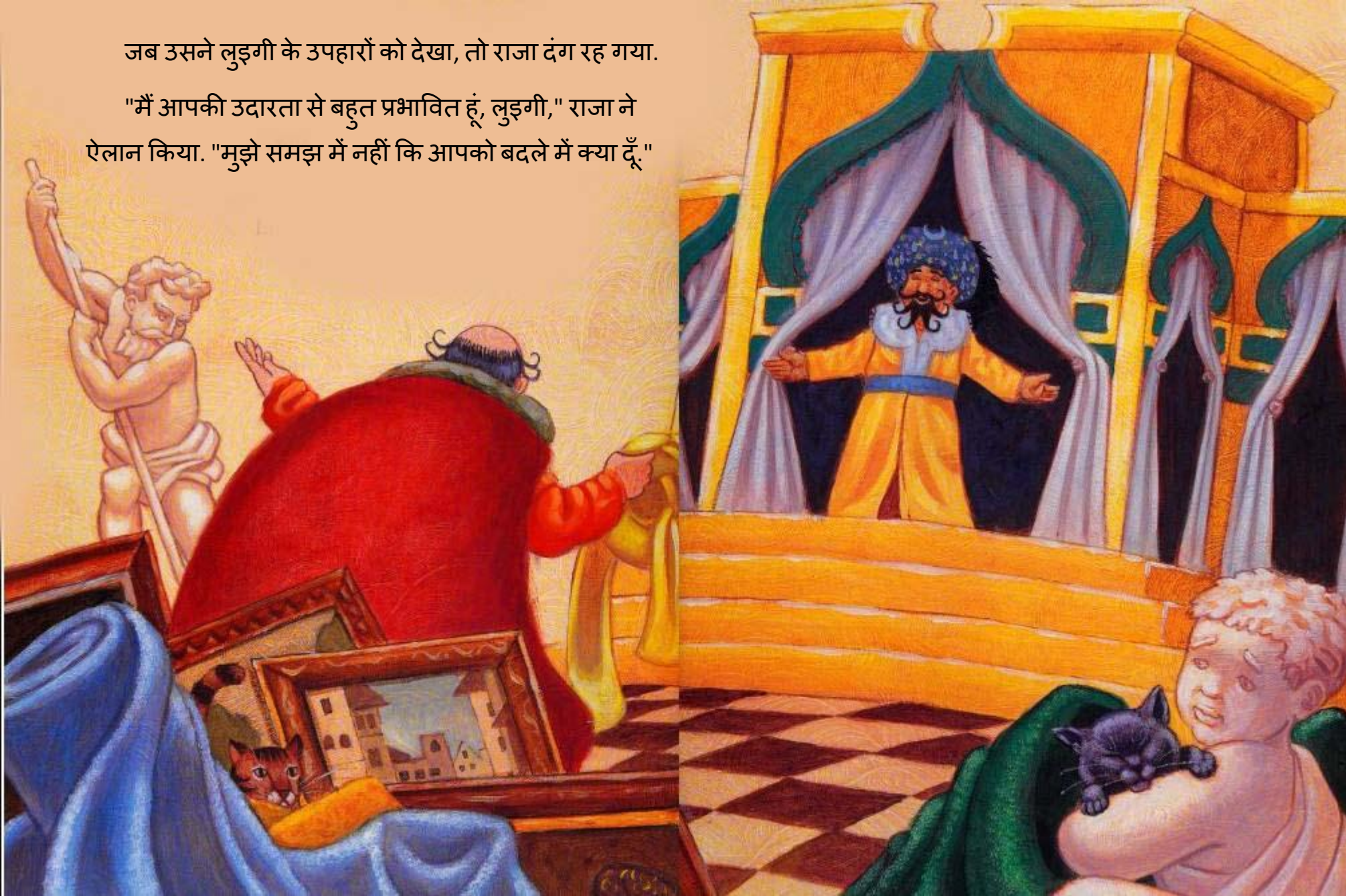

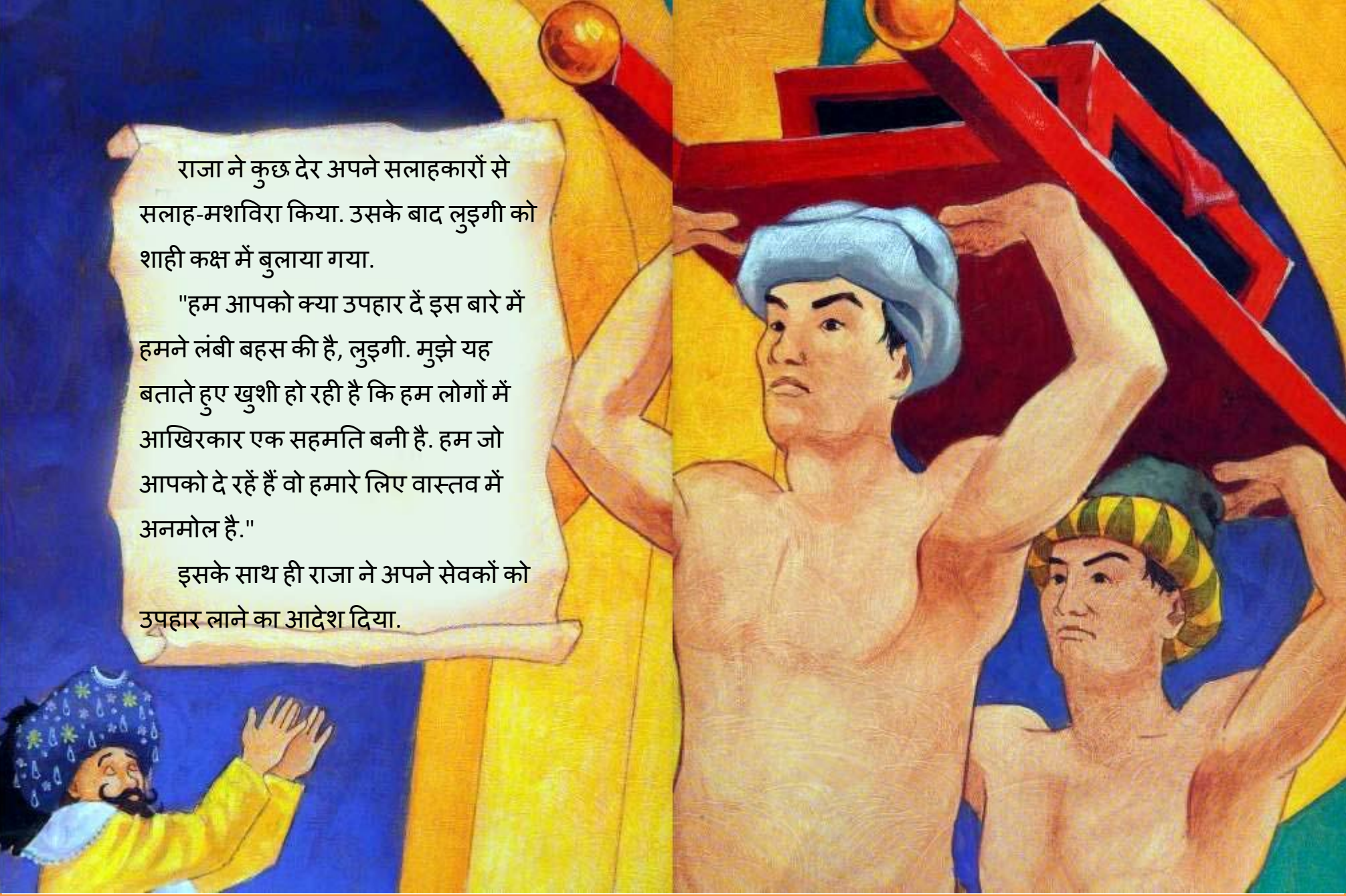

राजा ने कुछ देर अपने सलाहकारों से सलाह-मशविरा किया. उसके बाद लुइगी को शाही कक्ष में बुलाया गया.

"हम आपको क्या उपहार दें इस बारे में हमने लंबी बहस की है, लुइगी. मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि हम लोगों में आखिरकार एक सहमति बनी है. हम जो आपको दे रहें हैं वो हमारे लिए वास्तव में अनमोल है."

इसके साथ ही राजा ने अपने सेवकों को उपहार लाने का आदेश दिया.

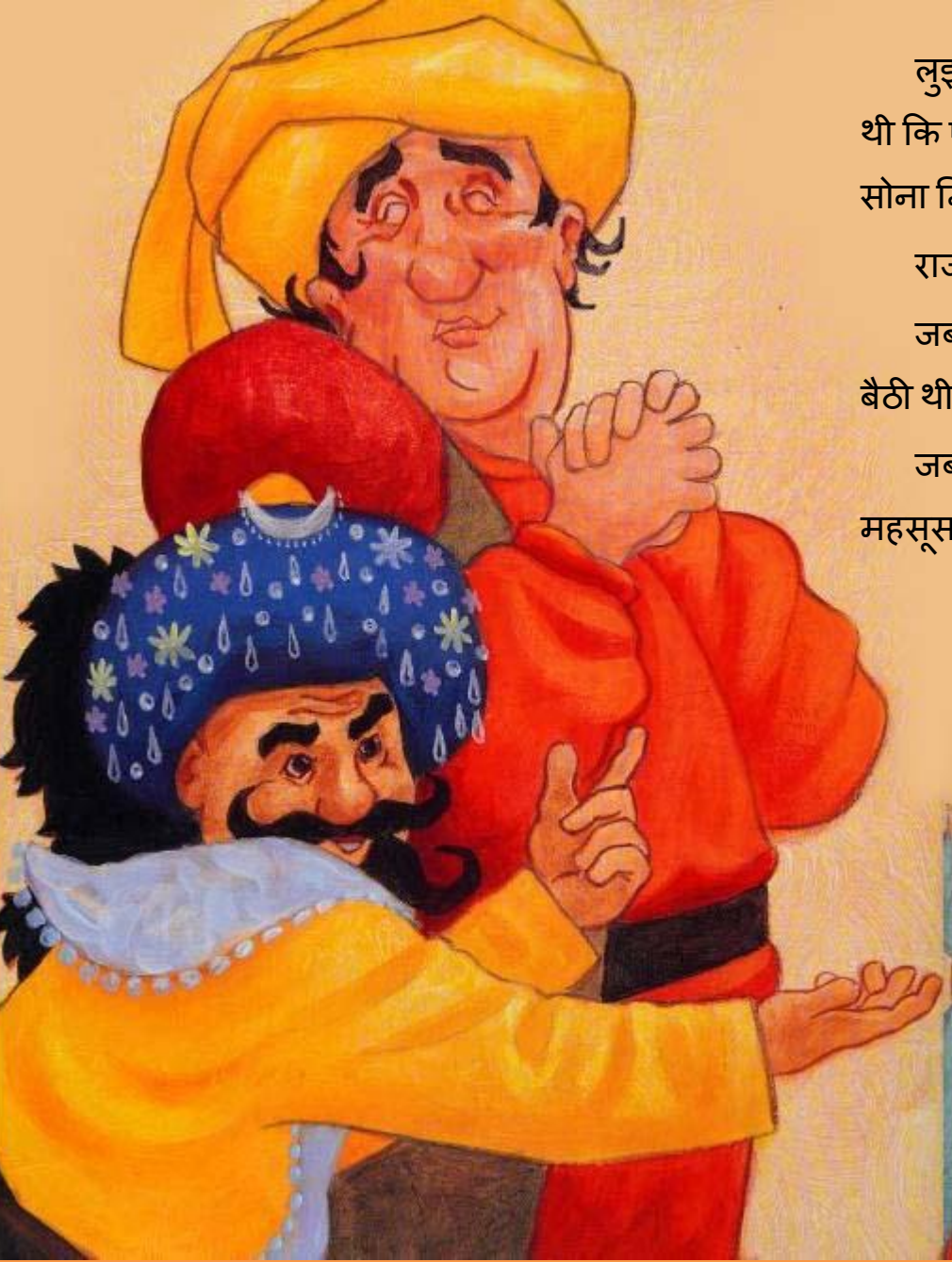

लुइगी बड़ी मुश्किल से अपने उत्साह को नियंत्रित कर सका. उसे उम्मीद थी कि एंटोनियो की तुलना में उसे कम-से-कम बीस गुना अधिक रत्न और सोना मिलेगा.

राजा ने लुइगी को मखमली कपड़े से ढका एक रेशमी तोहफा भेंट किया.

जब लुइगी ने कपड़ा उठाया, तो वो अवाक रह था. वहां फर की एक गेंद बैठी थी.

जब वो कुछ हिली-डुली तो लुइगी ने महसूस किया कि वो . . .

...एक बिल्ली का बच्चा था!

"आपके दोस्त एंटोनियो ने हमें जो अनमोल बिल्लियाँ दीं, उनके अभी कुछ बच्चे हुए हैं. क्योंकि आपने हमें इतने भव्य उपहारों का आशीर्वाद दिया, इसलिए हम भी आपको अपनी सबसे बेशकीमती चीज़ देना चाहते थे."

जब लुइगी ने राजा के मुस्कुराते हुए चेहरे को देखा, तो उसे महसूस हुआ कि, राजा के दिमाग में, छोटी बिल्ली का बच्चा, लुइगी द्वारा दिए गए पूरे खजाने से कहीं अधिक मूल्यवान था.

लुइगी जानता था कि इस मौके पर उसे मुस्कुराकर राजा के दिए उपहार से खुश होने का दिखावा करना ही होगा.

और उसने वही किया.

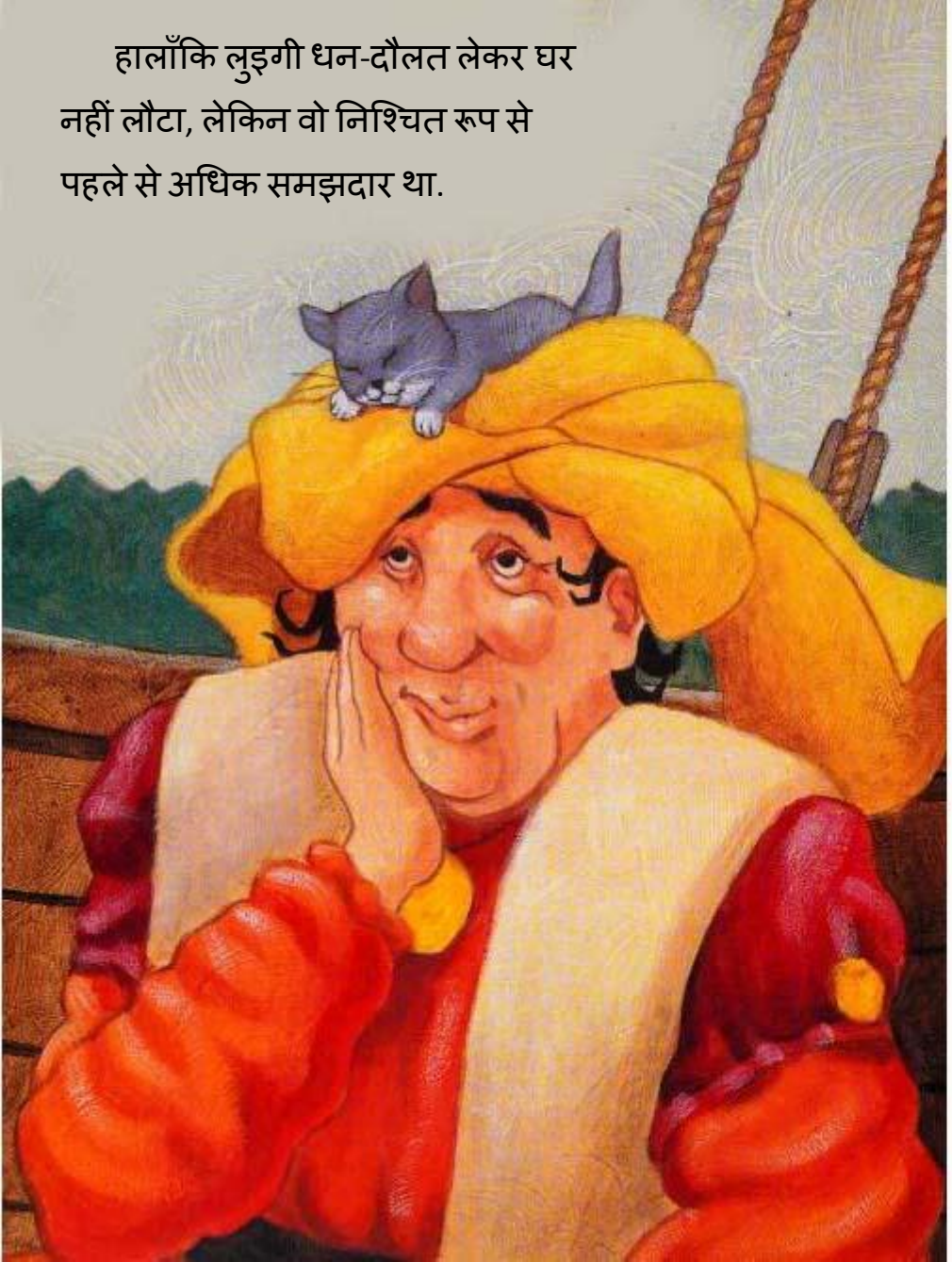

हालाँकि लुइगी धन-दौलत लेकर घर नहीं लौटा, लेकिन वो निश्चित रूप से पहले से अधिक समझदार था.

समाप्त